रमज़ान का महीना - स्वागत व प्रबन्ध

भाषांतरः- ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो। तथा प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह तआ़ला उसकी पूरी खबर रखता है।

(सुरह अल हश्रः 59:18)

मानव के जीवन में आयोजन व व्यवस्था कि बडी महत्वपूर्णता है। हर सन्तुलित व्यक्ति तथा बुद्धिमान मानव नियोजन से काम करता है। स्कूलों व कॉलेजों के लिए जो पाठ्यविवरण (पाठ्यक्रम) तैयार किया जाता है, वास्तव में वह छात्रों कि शैक्षिक जीवन के लिए योजना है।

माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए योजना करते हैं। एक व्यापारी (व्यवसायी) अपने व्यापार को विक्रय (प्रचार) के लिए अपने बुद्धि में सांख्यिकीय व उदयोग आयोजन रखता है। व्यापारिक आयोजन पर अ़मल करते हुए व्यापारियां अपने योजनाओं का प्रसारण करते हैं। अपने उत्पाद (पदार्थ) का विज्ञापन करते हैं, अधिक वस्तु व कार्यक्रम हथियार व समाज में शक्ति के रखने के साथ-साथ अत्यन्त योजना करते हैं।

आयोजन केवल मनुष्य वातावरण में ही नहीं बल्कि हैवानात के समाज पर नज़र डाली जाए तो पशु-पक्षी, समुद्री जीव भी अपने-अपने रूप से योजना

रखते हैं। कुछ जीव-जानवर मौसमी (समयानुकूल) के परिवर्तन के अनुसार से जीविका के लिए समरूप स्थान पर निवास करते हैं तथा दूसरे जंगल का रुक करते हैं। पशु-पक्षी मौसम के अनुसार से अपने स्थान को बदलते हैं। य

यहाँ तक के चींटियां गरमी के मौसम में सरदी के मौसम के लिए समूह व जमाव करती हैं।

जिस प्रकार मानव संसारी मामलात में योजना कर रहा है। माता-पिता अपने सन्तानों के भविष्य के लिए योजना कर रहे हैं। व्यापारी व्यापार व कारोबार को प्रचार देने के लिए आयोजना कर रहे हैं। सेना अपनी संगठन सर करने के लिए योजना कर रही है। हैवानात अपनी हैसियत से योजना कर रहे हैं।

इसी प्रकार एक बन्दे मुसलमान को परलोक (आखिरत) के जीवन कि चिन्ता करनी चाहिए। संसारी जीवन कि राहत के लिए आने वाले दिनों के लिए आयोजन करनी चाहिए। आखिरत में शान्ति व विश्राम के लिए भविष्य की नियोजन करनी चाहिए। अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो। तथा प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह तआ़ला उसकी पूरी खबर रखता है।

(सुरह अल हश्रः 59:18)

जब संसार के कामों के लिए प्रबन्ध व योजना की जा रही है, नवीनतम व सांसारिक शिक्षा, व्यापार, सुरक्षितता तथा अन्य सांसारिक कामों के लिए प्रबन्ध व आयोजन की जा रही है तो आखिरत के मामलात तथा धार्मिकर कर्म के लिए तथा अधिक प्रबन्ध किया जाना चाहिए है।

अल्लाह तआ़ला कि ओर से कोई वरदान मिल रहा है तो इस का सम्मान व आदर के लिए पहले से योजना होनी चाहिए. इस के लिए पहले से योजना होनी चाहिए।

रमज़ान के स्वागत का प्रथम खुत्बा- सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि गवाही

इस कारण से हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान कि पदार्पण से पूर्व इस के हितलाभ से संबंधित खुत्बे इरशाद फरमाए हैं। रमज़ान के स्वागत से संबंधि बुनियादी रूप से 3 रिवायतें हैं, जो रमज़ान के स्वागत के विषय पर 3 विशाल खुत्बों कि हैसिय रखती हैं-

माह रमज़ान कि आगामी (आमद) से पूर्व सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को इस कि आगामी कि खुश ख़बरी सुनाते। जैसा के मुसनद इ़माम अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को खुश ख़बरी सुनाते हुए उपदेश फरमायाः तुम्हारे पास रमज़ान के महीने कि आमद आमद (आगामी) है। यह एक बरकत वाला महीना है। अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इस के रोज़े फर्ज़ किए हैं। इस में जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं, दोज़क़ (नरक) के दरवाज़े बन्द किए जाते हैं तथा शैतानों को क़ैद किया जाता है। इस महीने में एक रात है जो हज़ार

महीनों से श्रेष्टतर व बेहतर है, जो व्यक्ति उस रात कि भलाई से अज्ञात रहा तो वास्तव में वह अज्ञात रह गया।

(मुसनद इ़माम अहमद, मुसनद अबु हुरैरह, हदीस संख्याः 9227)

माह रमज़ान कि आगामी के साथ ही जन्नत के दरवाज़े का खोला जाना बतला रहा है के जो लोग माह रमज़ान में नेकियां करेंगे उन के लिए जन्नत के दरवाज़े खुले हुए हैं। जन्नत में प्रवेश द्वार उन के लिए तय है।

जन्नत अपनी सम्पूर्ण नेअ़मतों (वदान्यता व उदारता) के साथ उन का प्रतिक्षा कर रही है, तथा रमज़ान कि आगामी पर दोज़क़ के दरवाज़ों का बन्द किया जाना, इशारा दे रहा है के इस मास मुबारक में नेक कर्म करने वालों के लिए दोज़क़ के दरवाज़े बन्द हैं। उन का ठिकाना तो जन्नत है।

इ़माम बैहखी ने शुअ़बुल इ़मान में एक रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः हज़रत रसुल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब माह रमज़ान कि पहली रात होती है शैतान तथा सरकश जिन्नात पेडियों में जकड दिए जाते हैं। दोज़क़ के दरवाज़े बन्द किए जाते हैं, फिर उस का कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, तथा जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, फिर उस का कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, तथा एक सूचना देने वाला प्रति रात सूचना देता हैः ऐ नेकी को चाहने वाले! नेकी कर गुज़र, तथा ऐ बुराई से बाज़ आजा, अल्लाह तआ़ला के दोज़क़ से आज़ाद किए हुए कई बन्दे होते हैं, रहमतों का यह सिलसिला हर रात जारी रहता है।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3346)

माह रमज़ान में अल्लाह तआ़ला कि ओर से विशेष रूप से ज़ाहिरी व बातिनी वातावरण को नेकियों के लिए चमकदार बना दिया जाता है। हर अनुसार से बन्दे के लिए नेकी आसान (सरल) कर दी जाती है तथा बुराई के कारण को अत्यन्त कम किया जाता है। शैतान कैदी होता है।

नफ्स, रोज़े के द्वारा वश में रहता है। हर ओर भलाई करने के लिए वातावरण आसान से आसान किया जाता है। इस नेअ़मत (उदारता) से हमें लाभ उठाना चाहिए। इस का आदर व सम्मान करना चाहिए।

रमज़ान के स्वागत का दुसरा खुत्बा, पहली रात- बख्शिश के समान

किसी बात को वर्णन करने के अनेक अंदाज होते हैं। बातत साधारण अंदाज में कही जाती है। इस के बजाए चेतावनी के साथ कही जाए तो इस कि महत्व मालूम होती है तथा यदि वर्णन करने से पूर्व प्रस्तावना लाई जाए तो वर्णन की जाने वाली बात कि ग़ैरमामूली महत्व स्पष्ट होती है।

सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान के बारे में प्रस्तावना के साथ वर्णन फरमा कर इस को ग़ैरमामूली महत्व को उजागर फरमाया। जैसा के सही इब्न खुज़ैमा में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमायाः सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः एक (आने वाला) तुम्हारे सामने आ रहा है तथा तुम उस का स्वागत करोगे। यह कथन 3 बार इरशाद फरमाया।

हज़रत उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन किया किः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! क्या कोई वही प्रवेश

हुई? कहा कोई विरोधी आया है? फरमायाः नहीं! निवेदन किया! तो फिर कया घटना पेश होने वाली है? आदेश फरमायाः (माह रमज़ान कि योजना है) निस्संदेह अल्लाह तआ़ला माह रमज़ान कि प्रथम रात इस क़िबले को मान्ने वाले सम्पूर्ण इ़मान वाले लोग कि मग़फिरत (मुक्ति) फरमा देता है। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाते समय अपने हाथ मुबारक से क़िबले कि ओर इशारा फरमाया।

(सही इ़ब्न कुज़ैमा, हदीस संख्याः 1778)

रमज़ान का महीना अभी शुरु नहीं हुआ, रमज़ान के आयोजन से पूर्व सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस को महत्वपूर्ण दे कर वर्णन फरमाया, इस महिमा व वैभव उजागर फरमाई। इस के बारे में मुक्ति (मग़फिरत) का इशारा सुनाया, ताकि इ़मान वाले रमज़ान के महिने कि आगामी से पूर्व तैयारी कर लें।

इस प्रकार महत्व के साथ वर्णन फरमाया के हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वही प्रवेश होने का संचेत किया। विरोधी के आक्रमण कि आशंका की, इस से मालूम होता है के माह रमज़ान से पूर्व एक संघटन के रूप पर इस के स्वागत कि तैयारी करनी चाहिए।

इस के पल-पल से लाभ उठाने के लिए बुद्धि व फिक्र रूप पर, ज्ञानी व कार्यरत रूप पर तथा सामाजिक व किफ़ायती रूप पर तैयार रहना चाहिए।

माह रमज़ान कि तैयारी तथा सहाबा का तरीक़ा

जैसा के --- तरीक़ अल हक़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत घोषित हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के आप ने फरमायाः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम जब माह शअ़बान का चांद देखते तो क़ुरान शरीफ को सीने से लगाए रहते तथा तिलावत (अनुवाचन) में व्यस्त रहते, मुसलमान अपने धन कि ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर तथा ग़रीब इस को प्राप्त कर के माह रमज़ान के रोज़े रखने कि शक्ति व क्षमता प्राप्त करें। राज्यपाल व ज़िम्मेदार लोग, क़ैदियों को तलब करते।

तथा इन में जो शरई़ सीमा के योग्य थे, इन पर सीमा जारी करते, वरना इन को रहा कर देते, व्यापारी लोग ज़िम्मे जो अधिकार हैं इन्हें समापन कर देते तथा जो चीज़ें प्राप्त करने की थीं इन्हें प्राप्त कर लेते यहाँ तक के जब रमज़ान का चांद देख लेते तो स्नान कर के एकता के साथ इ़बादत में व्यस्त हो जाते।

(-- तरीक़ अल हक़ जिल्द 1, पः 188)

उपर्युक्त रिवायत से स्पष्ट रूप पर मालूम होता है के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम माह शअ़बान में हर मंच पर माह रमज़ान कि तैयारी करते। कर्म के दृष्टिकोण से तैयारी के लिए तिलावत क़ुरान का विशेष प्रबन्ध करते।

किफायती मंच पर तैयारी करते हुए लेन-देन के मामला का संपादन करते। अपने ज़िम्मे जो अधिकार व ज़िम्मेदारी बाखी हैं इन्हें समापन करते। धन व राशी को वसूली करते। समाजि मंच पर तैयारी करते, बूढेलोग अपनी तैयारी के साथ-साथ दुसरों कि तैयारी का लिहाज़ रखते, शअ़बान में धन कि ज़कात निकालते, ताकि दरिद्र व गरीब सदस्य, रोज़ा रखने के लिए ज़कात कि राशी व पैसे के द्वारा तैयारी कर लें।

जिन क़ैदियों से शरई सज़ा संबंधित नहीं, इन्हें रिहा करते ताकि वह भी माह रमज़ान कि तैयारी कर लें। हर रूप से तैयारी करने के बाद जब माह रमज़ान का चांद देखते तो हमेशा ध्यान व एकाग्र हो जाते। सम्पूर्ण प्रबन्ध के साथ स्नान कर के हमेशा इबादत में व्यस्त हो जाते।

रमज़ान के स्वागत पर तीसरा प्रसारित खुत्बा

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान कि विशिष्टता व प्रतिष्ठा, रोज़ों कि फरज़ीयत तरावीह कि महत्वपूर्ण तथा शब खद्र कि उत्कृष्टता व उत्तमता पर निर्धारित विशाल खुत्बा आदेश परमायाः यह रमज़ान के स्वागत के विषय पर लम्बा खुत्बा है। जिसकी रिवायत इमाम बैहखी ने शुअबुल इमान में की हैः-

भाषांतरः- हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शअबान के अंतिम दिन हम से खुत्बा आदेश फरमाया तथा इरशाद फरमयाः अय लोगो! तुम पर एक वैभव व प्रतिभा वाला महीना छायामात्र हो चुका है। वह बरकत वाला महीना है, वह ऐसा महीना है जिस में एक विशाल रात है जो 1000 महिनों से श्रेष्टतर है। अल्लाह तआला ने इस के रोज़ों को फर्ज़ घोषित किया तथा रात में इबादत करने को नप्ल घोषित दिया। इस महिने में जिस व्यक्ति ने नफ्ल कर्म व अमल किया वह इस व्यक्ति के प्रकार है जिस ने दूसरे महिने में फर्ज़ समापन किया तथा जिस व्यक्ति के प्रकार है जिस ने दूसरे महिने में 70 फराइज़ समापन किए।

तथा वह सब्र व धीरज (सहनशीलता) का महीना है तथा सब्र का सवाब व पुण्य जन्नत है तथा --- का मास है। यह ऐसा महीना है जिस में मोमिन का रिज़्ख (संपोषण व पोषण) बढा दिया जाता है। इस महिने में जिस ने एक रोज़ेदार व उपवासी को इफ्तार करवाया वह इस के पापों कि बख्शिश

तथा दोज़क़ से इस कि गरदन कि स्वतंत्रता का कारण है तथा इस के लिए रोज़ेदार (उपवासी व तीव्रतर) के सवाब व पुण्य के बराबर प्रतिलाभ व सवाब है उपवासी के सवाब में कमी किए बिना।

हम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! हम में से हर व्यक्ति वह नहीं पाता जिस के द्वारा वह रोज़ेदार व उपवासी को इफ्तार करवाए, तो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः अल्लाह तआ़ला यह पुण्य इस व्यक्ति को भी देता है जिस ने किसी रोज़ेदार व उपवासी को दूध के घूंट या एक खजूर या पानी के घूंट पर इफ्तार करवाया ता जो व्यक्ति किसी रोज़ेदार को पेट भर भोजन कराता है अल्लाह तआ़ला इस को मेरे हौज़ से ऐसा घूंट पिलायगा के वह प्यासा ना होगा यहाँ तक के वह जन्नत में प्रवेश हो जाए।

तथा यह ऐसा महीना है जिस का आरंभ हिस्सा रहमत का है, बीचा का हिस्सा मग़फिरत (मुक्ति) का है तथा अंतिम हिस्सा दोज़क़ से आजादी का है तथा जो व्यक्ति इस महिने में अपने गुलाम (सेवक व दास) से बोझ को कम करें अल्लाह तआ़ला इस कि मग़फिरत (क्षमा व मुक्ति) फरमाएगा तथा इस को दोज़क़ से आजाद फरमाएगा।

तथा हज़रत हिम्माम कि रिवायत में इन शब्दों का समावेशन व उत्पत्ति है "माह रमज़ान में 4 चीज़ों को अधिक मात्रा में करो! इन में 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के द्वारा तुम अपने रब को राज़ी (सन्तुष्टी) कर सकते हो! तथा 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के अलावा तुम्हारे लिए कोई मौक़ा नहीं, अब रही वह 2 चीज़ें जिन के द्वारा तुम अपने रब को राज़ी (सन्तुष्टी) कर सकते हो! वह यह हैः कलिमे तैयिबा *ला इ़लाहा इल्लाहु मुहम्मदुर रसूल अल्लाह* का ज़िक्र करना तथा अल्लाह से मुक्ति व मग़फिरत कि कामना व इच्छा करना। अब वही वह 2 चीज़ें जिन के अलावा तुम्हारे लिए कोई चारा नहीं, वह यह हैः

तुम अल्लाह तआ़ला से जन्नत का प्रश्न करते रहो तथा दोज़क़ के अज़ाब व विपद से अल्लाह कि पनाह व रक्षा मांगो!"।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3455, मिश्कातुल मसाबीह, पः 173/174, ज़ुजाजुतल मसाबीह, किताबुल सैम, पः 541)

हम रमज़ान कि तैयारी कैसे करें?

हमारे लिए अवश्य है के इस माह मुबारक कि प्रतिभा के पेश नज़र अल्लाह तआ़ला कि बारगाह में तौबा व इस्तेग़फार करते हुए इस का स्वागत करें।

इन प्रतिभा व वैभव वाले क्षण को सन्तुष्ट समझते हुए इसके बरकात व सहायता प्राप्त करें तथा अपने समय को इ़बादत व समादर तथा भले कर्म करने में उपयुक्त व व्यस्त करें। क़ुरान कि तिलावत का खूब प्रबन्ध करें संबंधित सदस्य के अधिकार समापन कर दें, मामलात को साफ व शुद्ध बना लें। ज़कात संपादन कर के गरीबों को रमज़ान कि इ़बादत के लिए आमोद प्रमोद हो जाने का अवसर प्रदान करें।

माह रमज़ान कि आरंभ से पूर्व सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आदेश फरमाया हुआ एक-एक कलिमा अपने भीतर बडी कर्तव्य सो समोया हुआ है। नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस खुत्बे (धर्मोपदेश) के प्रारंभ में सारी मानव जाति से आचरण फरमाया, आप ने मानवता के संसार को आमंत्रण दिया।

माह रमज़ान के बारे में फरमायाः "तुम पर एक वैभव वाला महीना छाया हो चुका है।" आगामी को बतलाने के अ़रबी भाषा में बहुत से शब्द उपलब्ध हैं। परन्तु सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने *अज़ल्ल* (छायामात्र होने) के शब्द उपयोग फरमाया।

इस लिए के छाया के शब्द से रहमत व उदारता महरबानी बुद्धि में आती है। जिस प्रकार घना पेड अपने साये में रहने वालों को धूप कि कठिनता तथा वर्षा से बचाता है इसी प्रकार जो व्यक्ति माह रमज़ान के साये में आता है। इस के मामलात में व्यस्त रहता है। माह रमज़ान उसे क़ब्र कि तंगी, हश्र कि कठिनता तथा दोज़क़ कि गरमी से बचा लेता है।

यह कथन बतला रहे हैं के माह रमज़ान का पल-पल बन्दे, अल्लाह तआ़ला कि विशेष रहमत व कृपा तथा आनंद व महरबानी से नवाज़ा जाता है।

जहाँ कृपा व महरबानी अधिक होती है वहाँ कुश समय अज्ञानता व ग़फलत हो जाता है जैसा माता-पिता में पिता कि नाते से माह सन्तान पर अधिक महरबान होती है इसी कारण से सन्तान माह माँ का पालन में नाते के अनुसार से अधिक सुस्त दिखाई देती है।

इसी कारण से सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने रहमत के साथ प्रतिभा को उजागर किया के जो महीना तुम पर छायामात्र हो रहा है रहमतों वाला महीना है। जो महीना तुम्हारे पास आया है वह आन्नद व महरबानी वाला महीना है तथा यह महीना वैभव वाला भी है।

इस के सम्मान को व्यर्थ ना किया जाए, यह बडी शान वाला महीना है, इस का आदर व सम्मान किया जाए। जो इस कि प्रतिभा व प्रतिष्ठा को --- रखता है, उस पर करम दो बाला हो जाता है तथा जो आदर व इज्जत नहीं करता वह रहमत से दूर हो जाता है।

माह रमज़ान का प्रबन्ध- मुक्ति का साधन

हज़रत अबुल हसनात सैयद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक फज़ाइल रमज़ान में माह रमज़ान कि प्रतिभा व प्रतिष्ठा समापन से संबंधित एक हिकायत ज़िक्र फरमाई हैः

एक पारसी थे, अपने नंदन को देखे के रमज़ान के महिने में मण्डी (बाजार) में खाता जा रहा है। जैसे पान आदि त अपने बेटे को मारे तथा कहे के नायालक (अक्षम)! मुसलमानों के रमज़ान कि इज्जत नहीं करता। किसी ने पारसी को इस के मृत्यु के बाद देखा के जन्नत में पलंग पर बैठा है।

पूछा के जन्नत में कैसे पहुंच गए? वह कहे के जब मेरा समय खरीब आया आदेश हुआ के फरिश्तो इस को कुफ्र (उल्लंघन) पर मत रहने दो, इस से कहो के तु ने रमज़ान कि इज्जत व आदर की है इस लिए हम कहते हैं के तु हमारे लिए मुसलमान हो जा। मैं मुसलमान होने के बाद मरने का समय शुरु हुआ।

(फज़ाइल रमज़ान – पः25)

रमज़ान के महिने कि उपेक्षक मुक्ति से वंचित

जो व्यक्ति माह रमज़ान कि इज्जत व आदर नहीं करता इस महिने में अपने लिए मुक्ति व मग़फिरत कि सामाग्री प्राप्त नहीं करता। उस के लिए विनाश बतलाई गई है। जैसा के मुसतदरक अ़ला सहिहैन में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत कअ़ब बिन उ़जरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने कहा- हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने

आदेश फरमायाः मिम्बर (-- कि एक सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया, जब दूसरी सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया तथा जब तीसरी सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया।

जब सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मिम्बर से नीचे आए तो हम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! हम ने आज मिम्बर पर आप को तशरीफ ले जाते समय ऐसे कथन सुने के इस से पूर्व इस प्रकार ना सुने थे। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया के जिब्रील अमीन मेरे पास उपस्थित हुए तथा कहाः जो व्यक्ति रमज़ान को पाय तथा इस कि मग़फिरत (मुक्ति) ना हो वह अल्लाह कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन। जब मैं दूसरी सीढी पर खदम रखा तो जिब्रील ने कहाः जिस व्यक्ति के सामने आप का नाम मुबारक ज़िक्र किया जाए तथा वह आप पर दुरूद ना पढे वह अल्लाह कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन। जब मैं तीसरी सीढी पर खदम रखा तो जिब्रील ने कहाः जिस व्यक्ति के माता-पिता या इन में से एक बूढापे को पहुंच जाए तथा वह इन कि सेवा कर के जन्नत का अधिकारी ना बन सके वह अल्लाह कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन।

(मुसतदरक अ़ला सहिहैन, हदीस संख्याः 7365)

माह रमज़ान में पुण्य कि संख्या में अधिकता

यह महीना बरकतों वाला महीना है। इस मुबारक मास में करम दुगुना होता है। अन्य 11 महिनों में नफ्ल का सवाब व पुण्य नप्ल के बराबर तथा फर्ज़ का सवाब फर्ज़ के बराबर होता है परन्तु इस महिने में सवाब कि शरह बढादी जाती है। कर्म वही होता है, सवाब व पुण्य बढा दिया जाता है।

जो व्यक्ति नफ्ल समापन करता है उसे फर्ज़ के बराबर सवाब दिया जाता है। जो व्यक्ति फर्ज़ समापन करता है उसे 70 फराइज़ के बराबर पुण्य दिया जाता है। नमाज़ का संपादन कि बात हो तो नमाज़ के अरकान वही हैं।

धन खर्च करने का मामला हो या कोई और कर्म हो, -- इसी प्रकार रहे वही है जो दूसरे महिनों में होती है। परन्तु माह रमज़ान कि यह विशेष बरकत है के पुण्य व सवाब बढाया जाता है।

इमान वालों के रिज़्ख में अधिकता

इस प्रिय महिने में इमान वालों का रिज़्ख (संपोषण व पोषण) बढा दिया जाता है। ज़ाहिरी रिज़्ख भी बढाया जाता है तथा बातिनी रिज़्ख भी, शारीरिक भोजन में भी अधिकता होती है तथा रुहानी भोजन व ग़िज़ा में भी, ज़ाहिरी रिस्ख व जीविका में समावेशन हो तो हमारा दृष्टिकोण है, किसी व्यक्ति के लिए वर्ष भर जो भोजन, मेवे आदि उपलब्ध नहीं आतीं, दरिद्र से दरिद्र मुसलमान के लिए इस पावन महिने में सरलता व आसानी से उपलब्ध रहती हैं।

जगह जगह इफ्तारी बांटी जाती है। सहर व इफ्तार के लिए प्रबन्ध किया जाता है। रिज़्ख का बढना रिज़्ख के साधन व सामान पर निर्भर होता है, इस महीने में कसब के साधन बढ जाते हैं। आर्थिक व किफायती साधन में असमान्य रूप से अधिकता होती है।

बेरोज़गार सदस्य किफायती व आर्थिक कर के बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं तथा हदीस पाक कि बरकत ही है के रमज़ा के महिने में साधारण रूप से कर्मचारियों को बोनस (लाभांश) दिया जाता है।

बातिनी रिज़्ख (संपोषण व पोषण) के कया कहने! हर मुसलमान पर अल्लाह तआ़ला कि विशेष इ़नायतें होती हैं। माह रमज़ान के सवेरे व शाम (निशा) रहमतें प्रकट होती हैं। प्रतिदिन अल्लाह कि रहमत में डूबते हुए रहते हैं परन्तु उसे दिलवाले लोग ही जानते हैं। इस से अहले नज़र अनुभव रखते हैं। दर्शन (सर्वक्षण व निरीक्षण) करते हैं। विशेष अल्लाह तआ़ला के प्रकाश से – होते हैं।

कर्मचारियों का बोझ कम करने कि हिदायत

नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस पावन महिने में गुलामों के बोझ कम करने का उपदेश दिया। आदेश फरमायाः जो व्यक्ति इस महिने में अपने गुलाम (दास) से बोझ कम करे अल्लाह तआज़ला इस कि मग़फिरत (मुक्ति) फरमाएगा तथा इस को दोज़क़ से आज़ाद फरमाएगा।

इस ह्दीस पाक के अनुक्रम में हर वह सदस्य आता है जिस के प्रति कोई कार्य करता है। जिस कि निगरानी में कोई ज़िम्मेदारी पूरी करता है। जो अपने मातहत लोग कि ज़िम्मेदारियों को कम करता है। अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है के अल्लाह उसे भी पुण्य व सवाब से अनुदान करे।

अधिकारी व पदाधिकारी अपने कर्मचारियों के ज़िम्मेदारियों को कम करें। मैनेजर व संचालक अपने कार्यकर्ता का बोझ ह्लका करें। हर वह व्यक्ति जो दुसरों पर प्रबन्धक रूप से अधिकार रखता है। उन के लिए सुविधा संभरण करें। सरलता व आसानी कि रोह निकालें।

अंत में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के हमें माह रमज़ान का बेहतर रूप पर स्वागत करने कि मार्गदर्शन बख्शे। इस के लिए सम्पूर्ण रूप से तैयारी करने कि हिदायत दान करे।

इस मुबारक महिने के हर पल व क्षण का आदर व सम्मान करने वाला बनाए। इस कि विशिष्ठ बरकतों से हमारे ज़ाहिर व बातिन को उजागर कर दें।